गुरु नानक - सबद ७७

आपे गुण आपे कथै आपे सुणि वीचारु ॥

रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ५४

आपे गुण आपे कथै आपे सुणि वीचारु ॥
आपे रतनु परखि तूँ आपे मोलु अपारु ॥
साचउ मानु महतु तूँ आपे देवणहारु ॥१॥
हरि जीउ तूँ करता करतारु ॥
जिउ भावै तिउ राखु तूँ हरि नामु मिलै आचारु ॥१॥ रहाउ ॥
आपे हीरा निरमला आपे रंगु मजीठ ॥
आपे मोती ऊजलो आपे भगत बसीठु ॥
गुर कै सबदि सलाहणा घटि घटि डीठु अडीठु ॥२॥
आपे सागरु बोहिथा आपे पारु अपारु ॥
साची वाट सुजाणु तूँ सबदि लघावणहारु ॥
निडरिआ डरु जाणीऐ बाझु गुरू गुबारु ॥३॥
असथिरु करता देखीऐ होरु केती आवै जाइ ॥
आपे निरमलु एकु तूँ होर बंधी धंधै पाइ ॥
गुरि राखे से उबरे साचे सिउ लिव लाइ ॥४॥
हरि जीउ सबदि पछाणीऐ साचि रते गुर वाकि ॥
तितु तनि मैलु न लगई सच घरि जिसु ओताकु ॥
नदरि करे सचु पाईऐ बिनु नावै किआ साकु ॥५॥
जिनी सचु पछाणिआ से सुखीए जुग चारि ॥
हउमै तृसना मारि कै सचु रखिआ उर धारि ॥
जग महि लाहा एकु नामु पाईऐ गुर वीचारि ॥६॥
साचउ वखरु लादीऐ लाभु सदा सचु रासि ॥
साची दरगह बैसई भगति सची अरदासि ॥
पति सिउ लेखा निबड़ै राम नामु परगासि ॥७॥
ऊचा ऊचउ आखीऐ कहउ न देखिआ जाइ ॥

जह देखा तह एकु तूँ सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥
जोति निरंतरि जाणीऐ नानक सहजि सुभाइ ॥८॥३॥

सार: आत्मा व्यक्तिगत पहचान से परे है, यह सभी प्राणियों में विद्यमान सांझी चेतना का मूर्त रूप है। यह चेतना हमारे विचारों और कर्मों की मूक साक्षी के रूप में कार्य करती है। जीवन केवल अलग-अलग कर्ताओं और दर्शकों की श्रृंखला मात्र नहीं है, यह अनुभवों का एक निर्बाध प्रवाह है। विचार करने वाला, बोलने वाला और सुनने वाला, यह सब उसी एक महासागर की तरंगें हैं। यदि हम स्वयं को केवल एक तरंग तक सीमित कर लें तब हम अलगाव अनुभव कर सकते हैं किंतु जब यह समझ आता है कि सभी तरंगें एक ही सागर से उत्पन्न हैं तब हम हर कर्म को एक ही चेतना की अभिव्यक्ति के रूप में देख पाते हैं। यह समझ आत्मा को असीम चेतना के रूप में प्रकट करती है जहाँ द्वैत मिट जाता है और एकत्व में पूर्णता का उदय होता है।

आपे गुण आपे कथै आपे सुणि वीचारु ॥
स्वयं गुणों के धारक, स्वयं उनके बारे में बोलने वाले और स्वयं उन्हें सुनकर चिंतन करने वाले आप ही हैं। यह सत्य प्रकट करता है कि विचार, कर्म और आत्मचिंतन, सभी एक सांझी चेतना के माध्यम से परस्पर जुड़े हुए हैं।

आपे रतनु परखि तूँ आपे मोलु अपारु ॥
स्वयं रत्न, स्वयं उसका मूल्य परखने वाले और स्वयं ही उसकी अथाह कीमत हैं। यह उदाहरण बताता है कि रत्न और मूल्यांकनकर्ता एक ही हैं जिसका अर्थ है कि समस्त सृष्टि एक ही सार्वभौमिक चेतना का रूप है।

साचउ मानु महतु तूँ आपे देवणहारु ॥१॥
स्वयं शाश्वत, आदरणीय और पूज्य, आप स्वयं दाता हैं। यह दर्शाता है कि जो कुछ भी हम प्राप्त करते हैं, वह उसी चेतना से आता है जो समस्त सृष्टि में विद्यमान है। (१)

हरि जीउ तूँ करता करतारु ॥
प्रकृति के हर अंश में सर्वव्यापक ऊर्जा विद्यमान है, आप ही सभी कर्मों के स्रोत और कर्ता हैं।

जिउ भावै तिउ राखु तूँ हरि नामु मिलै आचारु ॥१॥ रहाउ ॥
जो कुछ भी जीवन में घटित होता है उसे प्रकृति के नियमों के अनुरूप स्वीकार करने से ही स्वीकृति मिलती है। एकता के चिंतन से यह जीवन-शैली का तरीका बन जाता है। (१)(विराम)

आपे हीरा निरमला आपे रंगु मजीठ ॥
स्वयं ही निर्मल हीरा हैं और आप स्वयं ही गहरे लाल रंग हैं। यह सर्वव्यापी स्रोत को दर्शाता है, बेदाग़ रंगहीन फिर भी जीवंत रूप से रंगीन जो समस्त सृष्टि में विविध रूपों में प्रतिबिंबित होता है।

आपे मोती ऊजलो आपे भगत बसीठु ॥
स्वयं ही चमकते मोती, स्वयं ही भक्त और वार्ताकार हैं। शुद्ध, साधक और गुरु के बीच कोई असमानता का भेद नहीं है क्योंकि सभी एक ही स्रोत, चेतना के रूप हैं।

गुर कै सबदि सलाहणा घटि घटि डीठु अडीठु ॥२॥
ज्ञान के शब्दों के माध्यम से हम यह समझ पाते हैं कि अदृश्य, सर्वव्यापी स्रोत अस्तित्व के हर पहलू में मौजूद है। (२)

आपे सागरु बोहिथा आपे पारु अपारु ॥
स्वयं विशाल महासागर और स्वयं नौका हैं और आप ही स्वयं उस पार का असीम किनारा हैं। यह अद्वैत की अभिव्यक्ति है क्योंकि यात्रा, यात्री और मंज़िल सभी एक ही सार्वभौमिक शक्ति की अभिव्यक्ति हैं।

साची वाट सुजाणु तूँ सबदि लघावणहारु ॥
स्वयं ही सच्चा मार्ग, सर्वज्ञ, ज्ञानी और मार्गदर्शक नाविक हैं। यह स्मरण है कि अंतर्दृष्टि के माध्यम से ही जीवन अपनी सही दिशा खोज पाता है।

निडरिआ डरु जाणीऐ बाझु गुरू गुबारु ॥३॥

निडर को यह समझना चाहिए कि किससे भय करना है। अज्ञान से जागरूकता की ओर मार्गदर्शन करने वाले ज्ञान के बिना अंधकार ही रहता है। यह स्मरण कराता है कि ज्ञान के बिना निडरता अहंकार बन सकती है इसलिए पतन से डरना ज़रूरी है। (३)

असथिरु करता देखीऐ होरु केती आवै जाइ ॥

पहचानें कि सार्वभौमिक कर्ता शाश्वत है और बाक़ी सब आता-जाता रहता है। यह धारणा इस बात पर ज़ोर देती है कि सार्वभौमिक चेतना स्थिर शक्ति है जो पुनर्जीवित होती है जबकि पदार्थ, विचार और इंद्रियाँ अस्थायी और क्षणिक हैं।

आपे निरमलु एकु तूँ होर बंधी धंधै पाइ ॥

स्वयं निर्मल, शुद्ध, सार्वभौमिक ऊर्जा के आप अवतार हैं। द्वैत का भ्रम ही सीमित कर उलझनों में बाँध देता है।

गुरि राखे से उबरे साचे सिउ लिव लाइ ॥४॥

जो लोग सार्वभौमिक जागरूकता को अपनाते हैं, वह प्रबुद्ध होकर उभरते हैं और चिंतन के माध्यम से सत्य से जुड़ते हैं। (४)

हरि जीउ सबदि पछाणीऐ साचि रते गुर वाकि ॥

प्रत्येक जीवन शक्ति में विद्यमान ऊर्जा गहन अंतर्दृष्टि को समझकर पहचानी जाती है। जब व्यक्ति सत्य में लीन होता है तब आध्यात्मिक संवाद की सार्थकता का सार समझ में आता है।

तितु तनि मैलु न लगई सच घरि जिसु ओताकु ॥

जिस देह में सत्य का निवास होता है वह अशुद्धियों से अछूता रहता है। यह उन लोगों का प्रतीक है जो सत्यनिष्ठ हैं और छल-कपट से दूर रहते हैं।

नदरि करे सचु पाईऐ बिनु नावै किआ साकु ॥५॥

चिंतन की कृपा से ही सत्य की प्राप्ति होती है। आत्म-चिंतन के बिना हमारा सहारा क्या है? यह बल देता है कि जागरूकता ही सार्थक जीवन का सहारा है। (५)

जिनी सचु पछाणिआ से सुखीए जुग चारि ॥

जो सत्य को पहचानते हैं, वह चारों युगों में (अर्थात् हर काल में) शांति से रहते हैं। यह रूपक बताता है चार युग हमारी आंतरिक मनःस्थिति को दर्शाते हैं, सच्ची शांति व संतोष मन की अवस्था है, परिस्थिति की नहीं।

हउमै तृसना मारि कै सचु रखिआ उर धारि ॥

जो अहंकार और इच्छा पर विजय प्राप्त कर लेते हैं, ऐसे साधक अपने अंतःकरण में सत्य को स्थिर कर लेते हैं।

जग महि लाहा एकु नामु पाईऐ गुर वीचारि ॥६॥

इस दुनिया में वास्तव में तब ही लाभान्वित होते हैं जब हम एकता पर विचार करते हैं और विचार-विमर्श के माध्यम से सार की तलाश करते हैं। (६)

साचउ वखरु लादीऐ लाभु सदा सचु रासि ॥

शाश्वत शक्ति की वास्तविकता को व्यापार की तरह मूर्त रूप देने से स्थायी लाभ मिलता है, सत्य तब पूंजी बन जाता है। यह दर्शाता है कि ईमानदारी पर बना जीवन फलता-फूलता है और स्थायी संतुष्टि सुनिश्चित करता है।

साची दरगह बैसई भगति सची अरदासि ॥

व्यक्ति का ज़मीर वास्तविक न्यायालय है, उससे जुड़ना सच्चे भक्त की प्रामाणिक खोज का प्रतीक है।

पति सिउ लेखा निबड़ै राम नामु परगासि ॥७॥
सम्मानपूर्वक कर्मों का लेखा संतुलित होता है, सर्वव्यापी के चिंतन ने यह बोध प्रदान किया है। उदाहरण के लिए जिस प्रकार स्पष्ट लेखा प्रविष्टियाँ बहीखाते को संतुलित करती हैं उसी तरह जीवन अपना सार जागरूकता में पाता है। (७)

ऊचा ऊचउ आखीऐ कहउ न देखिआ जाइ ॥
शाश्वत जीवन स्रोत को सर्वोच्च माना जाता है इसकी चर्चा तो होती है फिर भी यह अदृश्य है। यह हमें स्मरण कराता है कि इस सर्वव्यापी ऊर्जा को अनुभव तो किया जा सकता है पर देखा नहीं जा सकता।

जह देखा तह एकु तूँ सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥
जहाँ भी देखता हूँ हर चीज़ और हर व्यक्ति में एक सर्वव्यापी ऊर्जा की उपस्थिति दिखाई देती है। यह अंतर्दृष्टि सच्चे ज्ञान के माध्यम से आई है जो अज्ञानता से जागरूकता की ओर ले जाती है।

जोति निरंतरि जाणीऐ नानक सहजि सुभाइ ॥८॥३॥
अपने भीतर के शाश्वत प्रकाश को पहचानो। नानक कहते हैं कि यह शांत सहजता की स्थिति में स्वाभाविक रूप से अनुभव किया जाता है। सहज जागरूकता का अनुभव बल से नहीं बल्कि सहजता, सरलता और संतुलन की स्थिति से होता है। (८)(३)

तत्त्व: गुरु नानक हमें स्मरण कराते हैं कि सच्चा बोध बल प्रयोग से प्राप्त नहीं होता, यह सहजता और शांति की अवस्था में स्वाभाविक रूप से प्रकट होता है। जब मन और हृदय शांत और खुले रहते हैं तब जागरूकता स्वाभाविक रूप से उदित होती है। इस शांत सामंजस्य में, व्यक्ति उस उपस्थिति का अनुभव करने लगता है जो सदैव भीतर विद्यमान थी। प्रयास, कृपा-अनुग्रह का मार्ग प्रशस्त करता है, समझ बिना विरोध के प्रवाहित होती है और खोज केवल 'होने' की अवस्था में बदल जाती है। मात्र अस्तित्व में परिवर्तित हो जाती है। इस शांत, सहज अवस्था में, जागरूकता और बोध एक साथ मिलकर चलते हैं।

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com